

---

Shri Madhvashtakam

श्रीमध्वाष्टकम्

Document Information

---

Text title : madhvAShTakam

File name : madhvAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : trivikramapaNDitAchArya

Latest update : December 30, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीमध्वाष्टकम्



अज्ञाननाशाय सतां जनानां कृतावताराय वसुन्धरायाम् ।  
मध्वाभिधानाय महामहिम्ने हताघसङ्घाय नमोऽनिलाय ॥ १ ॥

येन स्वसिद्धान्तसरोजमद्धा विकसितं गोभिरलं विशुद्धैः ।  
दुस्तर्कनीहारकुलं च भिन्नं तस्मै नमो मध्वदिवाकराय ॥ २ ॥

प्रपन्नतापप्रशमैकहेतुं दुर्वादिवादेन्धनधूमकेतुम् ।  
निरन्तरं निर्मितमीनकेतुं नमाम्यहं मध्वमुनिप्रतापम् ॥ ३ ॥

शान्तं महान्तं नतपादकान्तं कान्तं नितान्तं कलितागमान्तम् ।  
स्वान्तं नयन्तं त्रिपुरारिकान्तं कान्तं श्रियो मध्वगुरुं नमामि ॥ ४ ॥

पुनाननाम्ने मुरवैरिधाम्ने सम्पूर्णनाम्ने समधीतसाम्ने ।  
सङ्कीर्तिताधोक्षजपुण्यनाम्ने नमोऽस्तु मध्वाय विमुक्तिसीम्ने ॥ ५ ॥

सन्मानसं सज्जनताशरण्यं सन्मानसं तोषितरामचन्द्रम् ।  
सन्मानसस्यस्तपदं प्रशान्तं नमाम्यहं मध्वमहामुनीशम् ॥ ६ ॥

संस्तूयमानाय सतां समूहैश्चन्द्रायमानाय चिदम्बुराशेः ।  
दीपायमानाय हरिं दिदृक्षोरलं नमो मध्वमुनीश्वराय ॥ ७ ॥

गुणैकसिन्धुं गुरुपुङ्गवं तं सदैकबन्धुं सकलाकलापम् ।  
मनोजबन्धुं नतपादपद्मं नमाम्यहं मध्वमुनिं वरेण्यम् ॥ ८ ॥

मध्वाष्टकं पुण्यतमं त्रिसन्ध्यं पठन्त्यलं भक्तियुता जना ये ।  
तेषामभीष्टं प्रतनोति वायुः श्रीमध्वनामा गुरुपुङ्गवोऽयम् ॥ ९ ॥

समस्तशास्त्राणि च सम्यगेव कृत्वा हरेः शाश्वतसद्गुणान् यः ।  
प्रकाशयामास समस्तयुक्तिभिः श्रीमध्वनामा च सदा प्रसीदताम् ॥ १० ॥


परमपुरुषश्रीचरणसरोरुहमधुकररूपकमानसमुदितम् ।  
गुरुकुलतिलकश्रीमदानन्दतीर्थयोगिवरं सततमहं वन्दे ॥ ११ ॥

श्रीमल्लिकुचवंश्येन मध्वाष्टकमुदीरितम् ।


श्रीमत्त्रिविक्रमारख्येन गुर्वनुग्रहकारकम् ॥ १२ ॥

॥ इति कविकुलतिलकश्रीमत्त्रिविक्रमपण्डिताचार्यविरचितं  
श्रीमध्वाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

——  
*Shri Madhvashtakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

